# बाबा ने कहा, बच्चा बहुत अच्छा है

● ब्रह्माकुमार दुर्गा प्रसाद माहेश्वरी, बी.के.कालोनी, शान्तिवन

सन् 1940 में राजस्थान के नागौर के एक छोटे-से गाँव तोसीना में इस शरीर का जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ। माता-पिता बहुत भक्ति भावना वाले तथा दान-पुण्य करने वाले थे। थोड़ी समझ आने की उम्र हुई तो सांसारिक पढ़ाई में रुचि न होने के कारण 5वीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ दी। पूजा-पाठ करना, सत्संग में जाना, 24 घंटे एक जगह बैठकर सम्पूर्ण रामायण का पाठ करना, यह सब चालू हो गया। ऐसा आभास अन्दर होता था कि इस जन्म में भगवान ज़रूर मिलेंगे। गीता में पढ़ता था, भगवानुवाच है, 'मैं साधारण तन में प्रवेश होकर आता हूँ पर मूढ़मति लोग मुझे नहीं पहचान पाते।' आरती में सुनता था, 'बूढ़ा ब्राह्मण बनकर हरि ने दर्शन दियो।' मेरे मन में हमेशा विचार चलता था कि इतने साधारण हरि को तू पहचानेगा कैसे, पहचानने की खूब होशियारी रखना। दिन निकलते गए, उम्र के 18वें साल में शादी हो गई।

### भगवान सच्ची गीता सुना रहे हैं

सन् 1960 में कोलकाता में नौकरी करने गया। लौकिक गाँव में आना-जाना होता रहता था। सन् 1966 में एक दिन कोलकाता में प्रात: 5 बजे कमरे में बैठा गीता-पाठ कर रहा था, इतने में मेरे सामने की गद्दी पर काम करने वाले एक सज्जन पुरुष पीछे खड़े होकर पूछने लगे, आप क्या कर रहे हैं? मैंने कहा, गीता पढ़ रहा हूँ। उन्होंने कहा, यह तो भक्तिमार्ग की गीता है, अब तो भगवान स्वयं अवतरित होकर ब्रह्मा के वृद्ध तन द्वारा सच्ची गीता सुना रहे हैं, आप मेरे साथ चलो, आप को दिखा दूँ, कहाँ, कैसे ज्ञान सुनाते हैं। सुनते ही मुझे बात जँच गई और उनके साथ चल दिया। उन्होंने मुझे सेवाकेन्द्र ले जाकर मुरली क्लास में बिठा दिया। मुरली के मधुर महावाक्य सुनते ही बुद्धि ने निर्णय किया कि यही सत्य ज्ञान है। पीछे से एक बहनजी ने आकर कहा, आप इधर आइये, आप नये हैं, सात दिन का कोर्स होगा फिर क्लास में बैठना। मुझे वहाँ से उठना अच्छा नहीं लगा। एक-एक ज्ञान-रत्न बुद्धि में फिट हो रहे थे। मेरी मन:स्थिति को जानकर आदरणीया दादी निर्मलशान्ता जी ने कहा, इसको क्लास करने दो, बाद में कोर्स कराना। मैंने दादीजी को कहा, क्लास पूरी होने पर सबसे ज्यादा ज्ञान-बिंदु सुना दूँगा। इस प्रकार मुझे जीवन भर की भक्ति का फल मिलने लगा। खुशी का पारावार नहीं रहा। रोज़ाना प्रात:क्लास में समय पर पहुँचने वाला पहला ईश्वरीय विद्यार्थी हो गया।

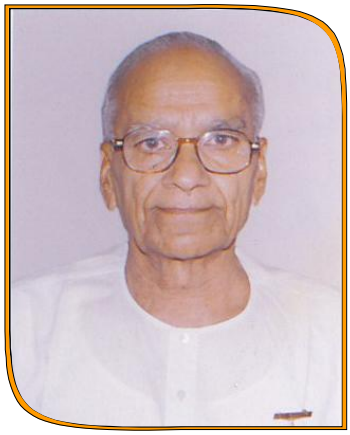

### बापदादा से मिलने की तड़प

दादी निर्मल शान्ता, संदेशी दादी, कुन्ज दादी माँ की तरह पालना देने लगे। विशेष योग-दृष्टि से शक्ति भरते गए। दादियों के मुख से 14 साल की भट्ठी के अनुभव, बापदादा के साथ के अनुभव, उनकी पालना और तपस्या के अनुभव सुन-सुन कर आँखों से अश्रु बहते थे, सोचता था, ऐसे प्राणेश्वर बापदादा की गोद में कब बैठूँगा, जन्म-जन्म की मिलन की प्यासी आत्मा की प्यास कब बुझेगी? हर रोज़ अनुभव सुनते-सुनते ऐसा उमंग आया, अभी मिलूँ, साथ खेलूँ, गोद में बैठूँ, बापदादा के साथ झूला झूलूँ। दादी यह भी सुनाती थी कि बाबा किसी बच्चे को चाँदी की अंगूठी पहनाते, किसी को सोने की पहनाते, किसी के साथ फोटो भी खिंचवाते, बैडमिंटन भी खेलते, मेरा उमंग और बढ़ जाता। अभी दो मास ही बीते थे

क्लास करते, मैंने दादीजी को कहा, बापदादा से मिलने भेजो। दादीजी ने कहा, एक साल धारणा में चलने के बाद भेजेंगे। मैंने कहा, इस मिलन के विरह में कहीं शरीर छूट गया तो बिना मिले ही चला जाऊँगा संसार से, एक साल तक जिंदा रहूँगा, पहले आप यह गारन्टी ले लो। दादीजी ने कहा, यह गारन्टी तो कोई नहीं ले सकता। मैंने पुन: अनुरोध किया कि आप भेजें तो ठीक होगा नहीं तो मेरा लौकिक परिवार तो राजस्थान में ही है। वहाँ जाने के बहाने पहुँच जाऊँगा बापदादा के पास। रहमदिल दादीजी ने मेरी इतनी तड़पन को देखकर कहा, दूसरे साथी भाइयों को भी तैयार करके साथ में भेजती हूँ। चार दिन बाद दो व्यापारी भाई तैयार हुए। कायदे सिर भारती बहनजी (अभी राजकोट में सेवारत) लेकर आई। अब तो खुशी का कहना ही क्या था। चला एक भक्त भक्ति का फल पाने। तीन बातें मन में लेकर चला था, 1. बाबा गोद में बैठाकर सोने की अँगूठी पहनायें, 2. मेरे अकेले के साथ बैडमिंटन खेलें, 3. बापदादा के साथ फोटो भी खिंचनी चाहिये। ये तीनों बातें पूरी होने पर ही 100 परसेंट निश्चय होगा, कैसा बचपना था!

### सब आशाएँ पूरी हुईं

सवेरे मधुबन पहुँचे। फिर तैयार हुए। पता चला कि शाम को पाँच बजे बापदादा मिलेंगे। दिनभर के इन्तजार के बाद आखिर वो घड़ी आई। वे दोनों भाई उम्र में बड़े थे, पहले वे मिले। एक भाई मिलकर आया, मेरी नज़र अँगूठी पर गई, चाँदी की थी। दूसरा भाई आया, फिर मेरी नज़र अँगूठी पर गई। उसकी भी चाँदी की थी। अब इस आत्मा का नम्बर आया। कैसा अद्भुत मिलन, कैसा प्यार, कैसी रूहानियत, जन्म-जन्म की अधूरी आस पूरी होने की शुभ वेला थी। बड़े प्यार से बापदादा ने गोद में बैठाया। बाबा की गोद में भार कम देकर मैंने अपने पैरों पर भार रखा। बाबा ने कहा, बच्चे, प्यार से बैठो, बाप की गोद है। खूब आराम से बैठाया। फिर सामने नज़र डाली तो चाँदी की अँगूठी का डिब्बा पड़ा था। जानीजाननहार बाबा ने सामने खड़ी लच्छू दादी से कहा, कलकत्ते का बच्चा है, बहुत अच्छा बच्चा है, इसके लिए सोने की अँगूठी का डिब्बा लाओ। फिर बड़े प्यार से अँगुली में अँगूठी पहनाई। इधर प्यार समा नहीं पाया तो मोती बनकर मेरी आँखों से बरसने लगा। जिसको दुनिया ने अनपढ़, गरीब जानकर ठुकराया, उसी आत्मा को आज गरीब नवाज़ बाप ऐसा सम्मानित कर रहे हैं। भक्तों ने ठीक ही कहा है, प्रभु तेरी लीला अपरंपार है। कितनी बड़ी इच्छा पूरी हुई मेरी।

दूसरे दिन शाम को फ्रेश होकर

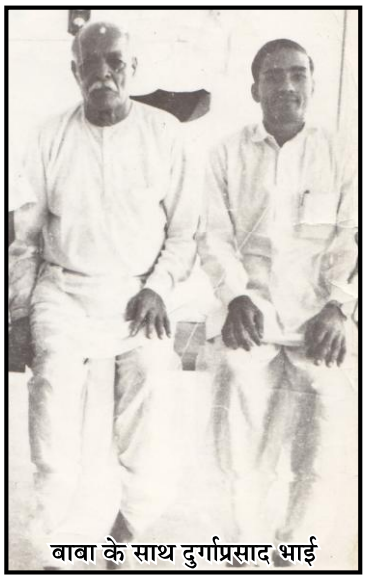

बाबा के साथ दुर्गाप्रसाद भाई

बाहर निकले, तो बाबा भी अपने कमरे से निकले। बैडमिंटन का सामान साथ में था। बाबा ने कहा, आओ बच्चे खेलते हैं। मैंने सोचा, मैं जवान बच्चा हूँ, मैं जीतूँगा पर हार रहा था। खेलते-खेलते बाबा ने पूछा, बच्चे, किसके साथ खेल रहे हो? मैंने कहा, बापदादा के साथ। फिर बाबा ने पूछा, जो बापदादा के साथ खेलता है वो भविष्य में किसके साथ खेलेगा? फिर मुसकराते हुए बाबा ने ही कहा, वो भविष्य में श्रीकृष्ण के साथ खेलेगा, ये संस्कार यहीं बन रहे हैं। तीसरे दिन 11 बजे बाबा झूले के पास ले गये। वहीं चंद्रहास दादा ने फोटो निकाला। बाद में मुझे वह फोटो कोलकाता भेजी गई।

### कर्मों की कुशलता

क्लास के बाद हर रोज़ फलों की टोली बाबा मेरे द्वारा बँटवाते। एक दिन

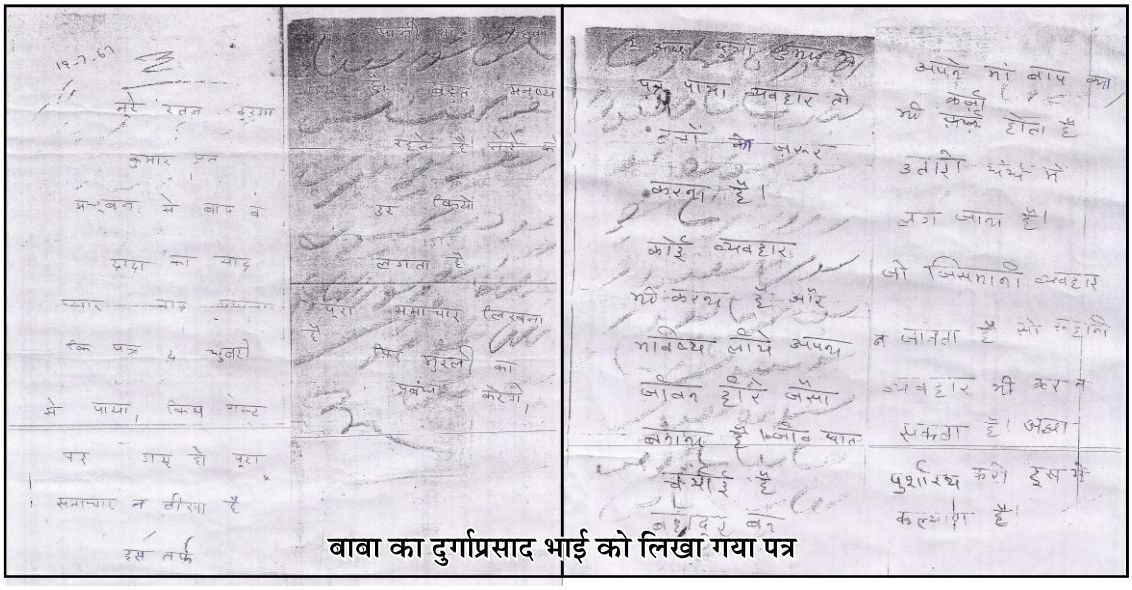

बाबा का दुर्गाप्रसाद भाई को लिखा गया पत्र

बर्तन में अंगूर थे। बाबा ने कहा, बच्चे 5-5 अंगूर सबको दे दो। मैं गिन-गिनकर देने लगा। गिनने में देर लग रही थी। बाबा उठकर मेरे पास आए। बर्तन में से नेचुरल मुट्ठी भरी तो मुट्ठी में पाँच अंगूर ही थे। फिर उठाये, पाँच ही आए। कई बार ऐसी जादूगरी दिखाई, इस प्रकार बाबा ने कर्मों की कुशलता सिखाई। एक दिन रोटी सेकने की बारी आयी। कभी एक साथ इतनी रोटियाँ सेकी नहीं थी। बाबा आये, पलटा लिया और फिर फटाफट उलट-पलट कर सेकने लगे। बाबा बोले, बच्चे, ऐसे सेकनी चाहिएँ, नीचे आँच तेज़ है, नहीं तो रोटी जल जायेगी। इस प्रकार खुद कर्म करके सिखाया। सात दिन रहने के बाद बाबा ने पूछा, बच्चे, तुमने बॉम्बे देखी कि नहीं? मैंने कहा, नहीं देखी बाबा। फिर कहा, बॉम्बे देखकर आओ, बाबा पत्र लिखकर देता है, शाम की ट्रेन में जाना है। दादी प्रकाशमणि के नाम पर पत्र दिया। बाबा ने ईशु दादी से पूछा, बच्चे ने यज्ञ के लिए क्या दिया? दादी ने बताया। बाबा ने कहा, बच्चे की आधी खर्ची वापिस दे दो। फिर बाबा ने सारी बात पूछी कि पगार कितनी मिलती है? मैंने बताया, मात्र 250/- मिलता है, इसी में भोजन व्यवस्था करनी होती है। फिर बाबा गेट के बाहर तक छोड़ने आए। मेरा दिल बाबा को छोड़ने को नहीं कर रहा था। चार बार वापिस लौटा। बाबा ने कहा, बच्चे ट्रेन निकल जाएगी। उस समय पैदल बस स्टैंड जाना होता था। फिर तो जाना ही पड़ा।

### सम्मान पाकर गद्‌गद् हो गया

सात दिन बॉम्बे गामदेवी सेंटर पर रहा। वहाँ लौकिक सम्बन्धियों को बाबा का सेवाकेंद्र दिखाया। एक जान-पहचान के मिल मालिक के घर कार्यक्रम कराया। सारे सेन्टरों से ब्रह्माभोजन का निमंत्रण मिला। बाबा के हाथ का पत्र और निर्मल शान्ता दादी का स्टूडेन्ट – इस प्रकार का सम्मान पाकर गद्‌गद् हो गया। वापस मधुबन लौटकर सारा समाचार बाबा को सुनाया, 4 दिन मधुबन में रहकर फिर कोलकाता गया। इसके बाद लौकिक परिवार वालों का खूब-खूब विरोध झेलना पड़ा पर बाबा ने जीवन नइया को संभाला। मुझे खुशी है कि 6 पुत्रों और एक पुत्री की पालना के निमित्त ड्रामा और बाबा ने बनाया। उनमें से दो पूर्ण समर्पित हैं और 5 लौकिक-अलौकिक सेवाओं में सन्तुलन रख कुमार जीवन व्यतीत कर रहे हैं। पिछले 12 वर्षों से शान्तिवन के साथ बी.के.कालोनी में रह रहे हैं। ❖